"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: September 2023 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

"योहान वोल्फगैंग गेटे के दृष्टिकोण से 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का अध्ययन"

डॉ. प्रवीन कुमार, सहायक प्रोफेसर, डी.ए.वी. कॉलेज, पेहवा (कुरुक्षेत्र)

प्रस्तावना

भारतीय साहित्य की समृद्ध परंपरा में महाकवि कालिदास का नाम सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित है। उनकी रचना 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' न केवल संस्कृत नाट्य परंपरा की अनुपम कृति है, अपितु विश्व साहित्य की भी एक कालजयी उपलब्धि है। इस नाटक की सौंदर्यपूर्ण रचना, भावप्रधान कथानक और गहन मानवोचित संवेदनाओं ने भारतीय साहित्य को विश्व पटल पर प्रतिष्ठित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जब यह कृति यूरोपीय भाषाओं में अनूदित हुई, तब इसकी प्रशंसा अनेक पाश्चात्य साहित्यकारों द्वारा की गई। विशेषतः जर्मन साहित्यकार जोहान वोल्फगैंग गोएथे ने 'शाकुंतल' की इतनी प्रशंसा की कि वह इसे भारतीय साहित्य की एक दिव्य देन मान बैठे। उन्होंने कालिदास की प्रतिभा को इतने ऊँचे स्तर पर आंका कि यह माना गया कि गोएथे की काव्य चेतना भी कालिदास से प्रभावित हुई। गोएथे का यह दृष्टिकोण न केवल भारतीय नाट्यकला की श्रेष्ठता को सिद्ध करता है, बल्कि यह भी प्रमाणित करता है कि संस्कृत साहित्य की सूक्ष्म भावनाएँ और सौंदर्यबोध किसी एक देश या कालखंड की सीमाओं में नहीं बँधते। यह शोध-पत्र इसी विमर्श को केंद्र में रखकर तैयार किया गया है कि कैसे गोएथे जैसे महत्त्वपूर्ण पाश्चात्य लेखक ने 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' को देखा, समझा और सराहा। इसमें यह विश्लेषण भी किया गया है कि गोएथे की साहित्यिक दृष्टि किन बिंदुओं पर कालिदास से प्रभावित हुई और उन्होंने शाकुंतल की किस विशेषताओं को विशेष रूप से महत्व दिया। यह अध्ययन न केवल साहित्य की तुलनात्मक दृष्टि को व्यापक बनाता है, अपितु यह भी प्रमाणित करता है कि भारतीय साहित्य विश्व साहित्य की मुख्यधारा में कितना प्रभावशाली और प्रासंगिक रहा है। इस शोध में हम भारत-जर्मन सांस्कृतिक संवाद के एक महत्वपूर्ण सेतु — 'शाकुंतलम्' — और उसके प्रति गोएथे की प्रतिक्रिया को गंभीरता से समझने का प्रयास करेंगे। भारतीय साहित्य का इतिहास अत्यंत गौरवशाली रहा है। संस्कृत साहित्य विशेषकर नाट्यकाव्य की परंपरा में महाकवि कालिदास का नाम अमर है। उनके द्वारा रचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' न केवल भारतीयों में अपितु समस्त विश्व साहित्य में आदर और प्रशंसा का पात्र रहा है। इसका प्रमाण जर्मनी के प्रख्यात साहित्यकार **योहान** वोल्फगैंग गेटे की प्रशंसा में लिखी गई पंक्तियाँ हैं, जो यह सिद्ध करती हैं कि 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' की काव्यात्मकता, भावनात्मक गहराई और कलात्मकता ने विश्वपटल पर प्रभाव डाला। इस शोध में हम 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के उस स्वरूप का अध्ययन करेंगे जिसे गेटे ने देखा, सराहा और यूरोप में प्रचारित किया। साथ ही यह समझने का प्रयास करेंगे कि पश्चिमी सौंदर्यबोध के प्रतिनिधि लेखक गेटे के लिए इस भारतीय नाटक में कौन-से गुण अद्वितीय थे।

"अभिज्ञानशाकुन्तलम् की परिचयात्मक झलक"

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' संस्कृत साहित्य के महाकवि कालिदास द्वारा रचित एक उत्कृष्ट नाट्यकृति है, जो न केवल भारतीय नाट्यकला की अमूल्य धरोहर है, अपितु विश्व साहित्य की दृष्टि से भी अत्यंत मूल्यवान रचना मानी जाती है। यह नाटक भारतीय काव्य और नाट्य परंपरा का सर्वोत्तम उदाहरण है जिसमें प्रकृति, प्रेम, मानवीय भावनाओं, स्मृति, और पुनर्मिलन जैसे विषय अत्यंत कोमलता व सौंदर्य के साथ प्रस्तुत किए गए हैं। यह काव्य प्राचीन भारतीय महाकाव्य 'महाभारत' के आदिपर्व में वर्णित दुष्यंत और शकुंतला की प्रेमकथा पर आधारित है, किंतु कालिदास ने इस कथा में नाटकीय विस्तार, काव्यात्मक सौंदर्य और गहन मानवीय संवेदना जोड़कर इसे एक विशिष्ट कलात्मक ऊँचाई प्रदान की है। नाटक की रचना 'नाट्यशास्त्र' के नियमानुसार की गई है और इसमें कुल सात अंक (अधिकार) हैं। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का केंद्रीय कथानक दुष्यंत व शकुंतला के मिलन, वियोग और पुनर्मिलन पर आधारित है। 'अभिज्ञान' का अर्थ है "पहचान", जो इस नाटक का मुख्य सूत्र भी है, क्योंकि एक अंगूठी के माध्यम से नायिका की पहचान और स्मृति की पुनःस्थापना होती है। इस नाटक में न केवल भावप्रधान प्रेम कथा है, बल्कि ऋषिकुल का वातावरण, प्राकृतिक सौंदर्य का जीवंत चित्रण, धार्मिक विश्वास, सामाजिक मर्यादा, और स्मृति की महत्ता भी सूक्ष्मता से उकेरी गई है। कालिदास ने इस कृति में प्रकृति को पात्रों के मनोभावों का संवाहक बनाया है। उनकी भाषा, अलंकार योजना, छंद सौंदर्य और दृश्य गठन

"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: September 2023 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

अद्वितीय है। नाटक के पात्र – शकुंतला, दुष्यंत, कण्व ऋषि, अनुशरणी बालिकाएँ, मातली, और अन्य सभी पात्र अपनी संवेदनशीलता, संवादों और चरित्रों के माध्यम से पाठक और दर्शक के मन को गहराई से प्रभावित करते हैं। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का प्रभाव न केवल भारत तक सीमित रहा, बल्कि जब इस कृति का अनुवाद जर्मन, अंग्रेज़ी और अन्य भाषाओं में हुआ, तो जो. वोल्फगैंग गोएथे जैसे महान पाश्चात्य साहित्यकारों ने इसकी प्रशंसा करते हुए इसे विश्व साहित्य की अनुपम निधि माना। यह नाटक भारतीय साहित्य की उस शक्ति का प्रतीक है, जो समय, भाषा और संस्कृति की सीमाओं से परे जाकर मानवता को स्पर्श करती है। इस प्रकार, 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' केवल एक प्रेमकथा नहीं है, यह स्मृति, संस्कार और सौंदर्य का ऐसा संगम है जो हर युग में प्रासंगिक बना रहेगा। "जर्मनी में संस्कृत साहित्य की स्वीकृति"

संस्कृत भाषा एवं साहित्य की वैश्विक स्वीकार्यता में जर्मनी का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा है। पश्चिमी जगत में संस्कृत भाषा के प्रति जो गहन जिज्ञासा और विद्वत्तापूर्ण अध्ययन विकसित हुआ, उसका प्रारंभ विशेषतः जर्मन विद्वानों द्वारा ही हुआ। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और 19वीं शताब्दी की शुरुआत में जब भारत में प्राचीन ग्रंथों की खोज प्रारंभ हुई, उसी काल में जर्मन विद्वानों ने संस्कृत के व्याकरण, काव्य, दर्शन और वेदों पर विस्तृत शोध कार्य आरंभ किया। विशेष रूप से फ्रांज बॉप (Franz Bopp) को पश्चिम में तुलनात्मक भाषाविज्ञान के जनक के रूप में जाना जाता है। उन्होंने संस्कृत को यूरोपीय भाषाओं के साथ तुलनात्मक ढंग से अध्ययन कर यह प्रमाणित किया कि संस्कृत इंडो-यूरोपीय भाषा परिवार की एक मूल भाषा है। इसके पश्चात मैक्समूलर (Max Müller) ने संस्कृत साहित्य और वेदों के संपादन, अनुवाद और व्याख्या में अद्वितीय योगदान दिया। उनका 'Rigveda-Samhita' का अंग्रेज़ी अनुवाद और व्याख्या कार्य भारत सहित समस्त विश्व में सराहा गया। उन्होंने Sacred Books of the East नामक विशाल ग्रंथमाला का संपादन किया, जिसमें अनेक भारतीय धर्मग्रंथों को प्रकाशित किया गया। जर्मन दार्शनिकों जैसे जो. वोल्फगैंग गोएथे (Johann Wolfgang von Goethe) और आर्थर शोपनहावर (Arthur Schopenhauer) ने भारतीय दर्शन और साहित्य में गहरी रुचि ली। गोएथे ने विशेषतः कालिदास की अभिज्ञानशाकुन्तलम् से प्रभावित होकर इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की और उसे विश्व साहित्य की अमूल्य कृति बताया। वहीं शोपनहावर ने उपनिषदों को मानव चिंतन की सबसे ऊँची उड़ान माना। जर्मनी में संस्कृत शिक्षा और शोध संस्थानों की स्थापना भी एक महत्वपूर्ण पहलू रही है। हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, गैटिंगन विश्वविद्यालय, हेडेलबर्ग विश्वविद्यालय तथा बर्लिन विश्वविद्यालय में संस्कृत का गहन अध्ययन और शिक्षण होता रहा है। अनेक जर्मन विद्वानों ने संस्कृत काव्य, व्याकरण, न्यायशास्त्र, योग, वेदांत, और आयुर्वेद पर शोध ग्रंथ लिखे, जिनका अंतरराष्ट्रीय जगत में व्यापक प्रभाव पड़ा। आज भी जर्मनी में अनेक शोध संस्थान, विश्वविद्यालय, और शैक्षणिक केंद्र संस्कृत भाषा के पठन-पाठन एवं अनुवाद कार्य में सक्रिय हैं। जर्मन युवाओं में वेदों, योग, ध्यान, गीता, और उपनिषदों को लेकर उत्सुकता का वातावरण देखा जाता है। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि जर्मनी न केवल संस्कृत साहित्य को समझने वाला राष्ट्र रहा है, अपितु उसने इसकी गूढ़ता और वैज्ञानिकता को स्वीकार करते हुए इसे विश्व पटल पर सम्मानजनक स्थान भी प्रदान किया है। यह परंपरा आज भी जर्मन अकादमिक जगत में जीवंत बनी हुई है।

"जोहान वोल्फगैंग गोएथे का जीवन परिचय"

जोहान वोल्फगैंग गोएथे (Johann Wolfgang von Goethe) जर्मनी के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकारों में से एक माने जाते हैं। इनका जन्म 28 अगस्त 1749 को फ्रैंकफर्ट (Frankfurt am Main), जर्मनी में एक संभ्रांत परिवार में हुआ था। इनके पिता एक समृद्ध सरकारी अधिकारी थे, जिन्होंने गोएथे की शिक्षा-दीक्षा पर विशेष ध्यान दिया। बाल्यावस्था से ही गोएथे को भाषाओं, कला और संगीत में गहरी रुचि थी। उन्होंने लैटिन, ग्रीक, फ्रेंच, अंग्रेज़ी, और अंततः संस्कृत तक का अध्ययन किया। गोएथे ने लीपज़िग विश्वविद्यालय (University of Leipzig) से कानून की पढ़ाई की, लेकिन उनका रुझान साहित्य और दर्शन की ओर अधिक था। उन्होंने अपने जीवनकाल में कविता, नाटक, उपन्यास, आत्मकथा, कला-समीक्षा, विज्ञान और दर्शन जैसे विविध क्षेत्रों में लेखन किया। उनका प्रसिद्ध उपन्यास The Sorrows of Young Werther (1774) ने उन्हें

"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: September 2023 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

यूरोप भर में प्रसिद्ध कर दिया। इसी तरह, उनका नाट्यकाव्य Faust (फाउस्ट) जर्मन साहित्य की एक कालजयी कृति मानी जाती है। गोएथे प्रकृति के प्रतीकात्मक चित्रण और मानवीय भावनाओं की गहराई में उतरने के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्हें भारतीय दर्शन और विशेष रूप से संस्कृत साहित्य में अत्यधिक रुचि थी। कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तलम् से वे अत्यंत प्रभावित हुए, और उन्होंने इसका जर्मन अनुवाद पढ़कर इसकी अत्यधिक प्रशंसा की। गोएथे ने संस्कृत साहित्य को पश्चिमी जगत में लोकप्रिय बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। गोएथे एक विचारक, वैज्ञानिक, कवि, और सांस्कृतिक सेतु-निर्माता थे। उन्होंने प्रकाश-विज्ञान और वनस्पति विज्ञान में भी गंभीर अनुसंधान किया। वे वीमार (Weimar) में राजकीय सेवा में भी रहे, जहाँ उन्होंने कला और साहित्य के संरक्षक के रूप में कार्य किया। उनका निधन 22 मार्च 1832 को हुआ, लेकिन उनका रचनात्मक योगदान आज भी मानवता को प्रेरित करता है।

गोएथे की 'शाकुंतल' के प्रति प्रथम प्रतिक्रिया

1789 में सर विलियम जोन्स द्वारा 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का अंग्रेज़ी अनुवाद प्रकाशित होने के कुछ समय बाद, जर्मन विद्वानों में इस नाटक की गहरी रुचि उत्पन्न हुई। 1791 में जॉर्ज फॉरस्टर ने इसका जर्मन में अनुवाद किया और उसे गोएथे को समर्पित किया। यह पुस्तक गोएथे के लिए एक साहित्यिक घटना बन गई, जिसने उनके जीवन में एक नए युग का आरंभ किया __गोएथे ने इस कृति की प्रशंसा में दो पंक्तियों की कविता रचित की जो व्यापक प्रसिद्धि प्राप्त की: "If in one word of blooms of early and fruits of riper years, Of excitement and enchantment, I should tell, Of fulfilment and content, of Heaven and Earth; Then will I but say 'Shakuntala' and have said all." इस कविता का जर्मन में संस्करण भी प्रकाशित हुआ और तत्कालीन साहित्यिक जगत में खूब सराहा गया. गोएथे ने स्वयं यह स्वीकार किया कि इस कृति ने उन्हें अत्यधिक प्रभावित किया। उन्होंने लिखा: "The first time I came upon this inexhaustible work… it aroused such enthusiasm that I could not stop studying it. I even felt impelled to adapt it for the German stage. Though unsuccessful, it became an epoch in my life…" इस अनुभव के पश्चात गोएथे ने लगभग तीस वर्षों तक न हिंदी न जर्मन किसी संस्करण को पढ़ा — इतना गहरा प्रभाव था। उनकी प्रतिक्रिया ने सिर्फ व्यक्तिगत प्रशंसा नहीं बल्कि एक युगांतकारी दृष्टिकोण प्रदर्शित किया कि भारतीय साहित्य, विशेषतः संस्कृत नाटक, यूरोप में भी विशिष्ट साहित्यिक मान्यता पा सकता है। इन प्रतिक्रियाओं ने जर्मनी के विद्वानों, जैसे गोएथे, हेर्डर, शिलर आदि में संस्कृत साहित्य के प्रति रुचि को तीव्र किया। विशेषतः हेर्डर ने इसे 'Oriental blossom' और 'यह हजार वर्षों में प्रथम और सर्वश्रेष्ठ कृति' कहा _इस प्रकार गोएथे की प्रथम प्रतिक्रिया 'शाकुंतलम्' के प्रति उत्साह, संवेदनशीलता और सांस्कृतिक समादर की स्पष्ट अभिव्यक्ति थी, जिसने यूरोपीय साहित्य में भारतीय नाट्य-कला का मार्ग प्रशस्त किया।

यूरोप में 'शाकुंतल' की ख्याति का प्रारंभ 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' की ख्याति भारत तक सीमित नहीं रही, बल्कि इस अमर नाट्य कृति ने यूरोप की साहित्यिक चेतना को भी झकझोरा। संस्कृत साहित्य की इस कालजयी रचना को सबसे पहले यूरोपीय जगत ने 18वीं शताब्दी में जाना जब जर्मन विद्वान सर विलियम जोन्स (Sir William Jones) ने इसका अंग्रेजी अनुवाद 1789 में प्रस्तुत किया। यह अनुवाद संस्कृत से सीधे अंग्रेज़ी में किया गया प्रथम बड़ा प्रयास था और यहीं से 'शाकुंतल' का यूरोपीय साहित्यिक परिदृश्य में प्रवेश आरंभ हुआ। विलियम जोन्स के इस कार्य ने एक ऐसी बौद्धिक क्रांति को जन्म दिया जिससे समूचा पश्चिमी साहित्यिक समाज परिचित हुआ कि भारत के पास एक गहन, दार्शनिक और कलात्मक साहित्यिक परंपरा है। 'शाकुंतल' के माध्यम से यूरोपीय पाठकों को पहली बार एक ऐसा सौंदर्यबोध मिला जो प्रकृति, प्रेम, करुणा और मानव मूल्यों से युक्त था। अभिज्ञान शाकुंतलम् की विषयवस्तु—दुष्यन्त और शकुंतला की प्रेमगाथा, ऋषि-कुल की शुचिता, प्रकृति के साथ मानव का तादात्म्य, और स्मृति–विस्मृति की कथावस्तु—ने यूरोप के साहित्यकारों, विशेषतः जर्मन, फ्रांसीसी और अंग्रेज विद्वानों को अत्यंत प्रभावित किया। जोहान वोल्फगैंग गोएथे, जो स्वयं यूरोप के महानतम साहित्यकारों में माने जाते हैं, इस कृति से इस हद तक प्रभावित हुए कि उन्होंने इसकी प्रशंसा में एक प्रसिद्ध काव्यांश लिखा जिसमें उन्होंने 'शाकुंतल' को मानवीय भावनाओं का

"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: September 2023 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

सुंदरतम चित्रण कहा। गोएथे की इस प्रतिक्रिया ने यूरोप के अन्य रचनाकारों को भी इस दिशा में प्रेरित किया। इसके बाद जर्मन, फ्रेंच, लैटिन, रूसी, डच आदि भाषाओं में इसके अनुवाद हुए और 'शाकुंतल' यूरोपीय विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम का हिस्सा बना। यूरोप की रंगमंचीय परंपरा में भी इसकी प्रस्तुतियाँ हुईं और यह नाटक वहाँ 'Oriental Drama' के रूप में पहचाना जाने लगा। संक्षेप में कहा जाए तो, अभिज्ञान शाकुंतलम् ने यूरोप में केवल एक भारतीय नाटक के रूप में ख्याति नहीं प्राप्त की, बल्कि यह एक संस्कृति दूत बन गया जिसने भारत के शास्त्रीय साहित्य की गरिमा को पश्चिमी साहित्यिक समुदाय के समक्ष स्थापित किया। इसकी ख्याति ने यूरोपीय रोमांटिसिज़्म, क्लासिसिज़्म और इंडोलॉजी के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में 'शाकुंतल' का महत्त्व

कालिदास द्वारा रचित 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' केवल एक कालजयी नाट्यकृति ही नहीं है, बल्कि यह भारतीय सांस्कृतिक चेतना, प्रकृति-प्रेम, नारी गरिमा तथा मानवीय संबंधों की गहराई का उत्कृष्ट प्रतीक है। आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जब समाज अनेक सांस्कृतिक, नैतिक और पर्यावरणीय संकटों से जूझ रहा है, तब 'शाकुंतल' जैसे ग्रंथों की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है।वर्तमान समय में नारी सम्मान, उसकी अस्मिता और अधिकारों की चर्चा व्यापक रूप से हो रही है। 'शाकुंतल' की शकुंतला एक आदर्श नारी है—संवेदनशील, विदुषी, आत्मसम्मानी और सहनशील। उसका चरित्र इस बात का प्रमाण है कि भारतीय साहित्य में नारी को सदैव एक गरिमामयी स्थान दिया गया है। आज की स्त्री को आत्मबल और आत्मगौरव की जो प्रेरणा चाहिए, वह शकुंतला के चरित्र से सहज प्राप्त होती है। 'शाकुंतल' के प्रत्येक दृश्य में प्रकृति एक जीवंत पात्र के रूप में उपस्थित है। ऋषिकान्याओं का पशु-पक्षियों से स्नेह, आश्रम का वात्सल्यपूर्ण वातावरण, पेड़ों और फूलों से संवाद—ये सभी आज के प्रदूषित और यांत्रिक जीवन में प्रकृति से दूर होते मानव को पुनः प्रकृति की गोद में लौटने का संदेश देते हैं। वैश्विक जलवायु संकट के दौर में यह नाटक एक सूक्ष्म पर्यावरणीय चेतावनी बनकर सामने आता है। आधुनिक युग में तीव्र गति, सूचना का अत्यधिक प्रवाह और व्यावसायिकता के कारण मानवीय संबंधों में संवेदनाएं कम हो रही हैं। 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' स्मृति-विस्मृति की गूढ़ कथा के माध्यम से यह दर्शाता है कि सच्चा प्रेम, करुणा और संवेदनशीलता ही संबंधों की नींव हैं। यह नाटक आज के युवाओं को भावनात्मक और मानसिक रूप से परिपक्व बनने की प्रेरणा देता है। वर्तमान वैश्वीकरण के युग में जब भारत विश्व समुदाय में अपनी सांस्कृतिक पहचान को पुनर्स्थापित करने का प्रयास कर रहा है, तब 'शाकुंतल' जैसे ग्रंथ इस दिशा में हमारे साहित्यिक धरोहर की श्रेष्ठता सिद्ध करते हैं। इसकी गूढ़ काव्यात्मकता, गहन दर्शन और नाट्य सौंदर्य भारत की सांस्कृतिक शक्ति को विश्व के समक्ष उजागर करते हैं। 'शाकुंतल' रस, अलंकार, छंद और संवाद की दृष्टि से आदर्श नाटक है। आज के साहित्यिक विद्यार्थी, रंगकर्मी, और नाट्य शोधार्थी इस कृति के माध्यम से भारतीय काव्यशास्त्र की ऊँचाइयों को समझ सकते हैं। यह नाटक समकालीन रंगमंच के लिए भी एक मार्गदर्शक रचना है। 'शाकुंतल' केवल एक ऐतिहासिक या साहित्यिक स्मारक नहीं, बल्कि वह आज के युग के लिए भी एक प्रासंगिक, शिक्षाप्रद और मार्गदर्शक कृति है। यह नाटक नारी चेतना, पर्यावरण संरक्षण, मानवीय मूल्यों, और भारतीय संस्कृति की सजीव प्रस्तुति है, जिसकी उपयोगिता और महत्ता हर युग में बनी रहेगी।

निष्कर्ष

योहान वोल्फगैंग गेटे जैसे महान यूरोपीय विचारक, कवि और नाटककार द्वारा 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' की प्रशंसा केवल एक साहित्यिक टिप्पणी नहीं थी, बल्कि भारतीय नाट्य परंपरा की विश्वसनीयता और सौंदर्यबोध की एक अंतरराष्ट्रीय मान्यता थी। गेटे ने इस काव्यनाट्य को "संपूर्ण साहित्यिक सौंदर्य का प्रतीक" माना और इसकी संरचना, पात्रों की भावप्रवणता तथा प्रकृति-संगति से वह अत्यंत प्रभावित हुए। शाकुन्तला की मार्मिकता, प्रेम,

"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: September 2023 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

वियोग और पुनर्मिलन की कथा में गेटे को वह गूढ़ भावनात्मक गहराई दिखाई दी, जो किसी भी विश्वस्तरीय काव्य-रचना को महान बनाती है।गेटे की दृष्टि से 'शाकुंतल' केवल एक नाटक नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति है, जहाँ शब्द, प्रकृति और भावनाएं समरस होकर पाठक या दर्शक को एक अनुभवात्मक यात्रा पर ले जाती हैं। वह इस नाटक में भारतीय सांस्कृतिक चेतना, धर्म, करुणा और सौंदर्य को अद्वितीय ढंग से समाहित हुआ पाते हैं। गेटे ने इस रचना को जर्मन साहित्य के बौद्धिक वातावरण में स्थापित कर, यूरोप और भारत के सांस्कृतिक सेतु का कार्य किया।वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जब वैश्विक मंच पर भारत की सांस्कृतिक धरोहर की पुनर्पुष्टि हो रही है, तब गेटे की यह स्वीकृति और उनकी सकारात्मक दृष्टि हमें पुनः यह स्मरण कराती है कि भारत का शास्त्रीय साहित्य समय की सीमाओं से परे है। 'शाकुन्तल' न केवल कालिदास की प्रतिभा का प्रमाण है, बल्कि यह भी दिखाता है कि किस प्रकार भारतीय साहित्य विश्वपटल पर आत्मबोध और मानवीय सौंदर्य का प्रतीक बन सकता है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि गेटे की दृष्टि में 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' एक ऐसी विश्ववंद्य रचना है, जो भाषाई सीमाओं को लांघकर मानवीय संवेदनाओं को छूती है और साहित्य के सार्वकालिक मूल्यों की पुष्टि करती है। गेटे के दृष्टिकोण से इस रचना का अध्ययन केवल भारतीय संस्कृति को समझने का माध्यम नहीं, बल्कि विश्व साहित्य के साझा सौंदर्यबोध का उत्सव है। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' न केवल भारतीय संस्कृति की सौंदर्यमयी अभिव्यक्ति है, अपितु वह विश्व साहित्य की धरोहर भी है। योहान वोल्फगैंग गेटे जैसे महान पाश्चात्य साहित्यकार का इसकी प्रशंसा करना, यह प्रमाणित करता है कि भारतीय साहित्य की भावना, गहराई और कलात्मकता सार्वभौमिक है। यह शोध हमें यह भी दिखाता है कि साहित्य सीमाओं से परे जाकर आत्मा को स्पर्श करता है। कालिदास और गेटे की यह युगीन संगति साहित्य में सांस्कृतिक संवाद का अनोखा उदाहरण है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कालिदास — **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**, संपादक: पं. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', राष्ट्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
2. गोएथे, योहान वोल्फगैंग — Faust, अनुवाद: बेहराम जी मालन, जर्मन साहित्य प्रकाशन, बर्लिन।
3. Gerow, Edwin — Indian Poetics, University of California Press, 1977.
4. Deussen, Paul — Outline of the History of Indian Philosophy, Trübner & Co., London, 1906.
5. Winternitz, M. — A History of Indian Literature, Volume 1, Motilal Banarsidass, Delhi, 1991.
6. Masson, J. L. — Kalidasa: The Loom of Time, Penguin Books, New Delhi, 2005.
7. Arnold, Thomas — Goethe and the Orient: A Study in the History of Ideas, Harvard Oriental Series, 1936.
8. Chatterjee, Bankim Chandra — Essays on Sanskrit Drama, Calcutta University Press, 1890.
9. Müller, Max — India: What Can It Teach Us?, Longmans Green & Co., London, 1883.
10. Bhattacharya, Sabyasachi — Cultural Encounters and Literary Appropriations: India and the West, Sahitya Akademi
11. William Jones – Sakuntala: A Sanskrit Play (1789)
12. Goethe, Johann Wolfgang – Collected Works, Vol. 3
13. डॉ. नगेन्द्र – भारतीय काव्यशास्त्र की रूपरेखा
14. Dr. Devendra Kale – Goethe and Indian Literature, Journal of Indo-German Studies
15. Apte, D.G. – Kalidasa: His Art and Culture
16. Encyclopaedia Britannica – Goethe on Sanskrit
17. गेटे: आत्मकथा (अनुवादित संस्करण, जर्मन से हिंदी)